P: ISSN NO.: 2394-0344 RNI No.UPBIL/2016/67980 VOL-5* ISSUE-4* July - 2020
E: ISSN NO.: 2455-0817 *Remarking An Analisation*

वेद–नारी शिक्षा एवं कल्याण के प्रथम उद्घोषक

Vedas : The Pro-pounder of Women Education and Welfare

Paper Submission: 16/07/2020, Date of Acceptance: 25/07/2020, Date of Publication: 26/07/2020

अंजू सेठ
एसोसिएट प्रोफेसर,
संस्कृत विभाग,
सत्यवती महाविद्यालय,
दिल्ली, भारत

सारांश

नारी विधाता की अनुपम कृति है जो सौन्दर्य प्रतिमा होने के साथ अध्यात्मज्ञा शिक्षा दीक्षा युक्ता एवं कल्याण कारिणी रूप में भी विशिष्ट वन्दनीय है। इन्ही गुणों से संवलित नारी समाज में अपना विशिष्ट महत्त्वपूर्ण स्थान स्वयं ही अर्जित करती हुई सबको चमत्कृत करती है।

सर्वविज्ञान पंडित वेद में विविध विषय, सभी परिवेश, समाज के सभी तत्वों एवं पक्षों पर विचाराभिव्यक्त करते समय सम्पूर्ण समाज के कार्यकलापों की धुरी स्वरूपा नारी के विविध आयामों के विवेचन करने के साथ साथ नारी शिक्षा एवं नारी कल्याण सम्बन्धी पक्षों पर भी विशिष्ट मन्तव्य वर्णित हैं। वैदिक युग नारी कल्याण एवं उनकी शिक्षा दीक्षा के प्रति विशिष्ट जागरूकता था अथर्ववेद ११.५.१८, अथर्ववेद १४.१.१६, अथर्ववेद१४.१.२०, अथर्ववेद१२.२.३१, ऋग्वेद१.८५.४६, ऋग्वेद१.१६४.४१ऋग्वेद३.३१.१, ऋग्वेद१०.१.५६, यजुर्वेद२०.६, यजुर्वेद१७.४८, यजुर्वेद१७.४५, अथर्ववेद११.१.१७, ऋग्वेद१०.८४.७ इत्यादि।

अतएव वैदिक युग में उपलब्ध नारी शिक्षा एवं कल्याण सम्बन्धी इन तथ्यों को मूल उद्धरणों के माध्यम से वर्णित करते हुए उनकी वर्तमान समय में प्रासंगिकता बताना तथा साथ ही साथ वर्तमान समय में उपलब्ध एवं उद्घोषित कल्याणकारी योजनाओं एवं नीतियों के साथ विवेचनात्मक, विश्लेषणात्मक एवं तुलनात्मक अध्ययन प्रस्तुत करना ही इस लेख का मुख्य उद्देश्य है। इस प्रकार के तुलनात्मक अध्ययन के पश्चात विभिन्न कल्याणकारिणी तथ्यों की उपयोगिता को भी स्पष्ट करने का भी प्रयास किया जायेगा तथा प्राचीन वैदिक अवधारणाएं वर्तमान नीतियो के क्रियान्वयन में किस प्रकार सहायक सिद्ध होंगी यह भी स्थापित किया जायेगा।

The paper aims at exploring the Vedic references and concepts related to the women education and welfare that have the possibility of guiding the direction of the present day world to ensure a better world for the women. The women enjoyed a respectable and higher status in Vedic as well as in post Vedic era. These Vedic injunctions and ideals can very well serve as a role model and guiding principle for the modern policy makers

मुख्य शब्द : नारी, शिक्षा, वेद, अध्यात्म, कल्याण

प्रस्तावना

शक्तिस्वरूपा नारी संपूर्ण विश्व को अपनी प्रतिभा एवं चातुर्य से चकाचौन्ध करती हुई अपनी शाश्वत सत्ता को और भी अधिक प्रस्फुटित करती है। भारत एवं भारतीयता की ध्वजा सर्वत्र प्रसारित करने वाली सरस्वती स्वरूपा नारी को सर्वत्र आदर प्राप्त है। यही भारतीय संस्कृति का मूल उद्देश्य रहा है। हमारी भारतीय संस्कृति प्रथमा एवं विश्ववारा है जिसके विषय में कहा गया –

''सा प्रथमा संस्कृति विश्ववारा''

भारतीय संस्कृति बिना भेदभाव के सभी के सर्वाङ्गीण हित हेतु सर्वदा तत्पर रही है जिसको अनवरत रूप से सतत् प्रवहमान बनाने में महिलाओं का विशिष्ट योगदान रहा है।

वास्तव में नारी विधाता की वह अनुपम कृति है जो अतीत को वर्तमान से जोड़कर एवं वर्तमान को भविष्य की ओर अग्रसर करती हुई सर्वदा सुख, सम्पदा का संचार करती है।

वैदिक युग भारतीय संस्कृति का वह स्वर्णिम युग था जो नारी शिक्षा नारी कल्याण हेतु सर्वाधिक साधन, मूल्य एवं वातावरण प्रदान करता था।

सौभाग्य की बात है कि स्थल–स्थल पर वैदिक उद्धरण इस तथ्य की पुष्टि करते प्रतीत होते हैं कि उस समय नारी ''गृह'' हेतु गृहकल्याण हेतु धुरीस्वरूपा थी। वह दोहरी, तिहरी भूमिकाओं को निभाते हुए भी गरिमा मंडित थी।

वैदिक युगीन अवधारणाएँ ही वर्तमानयुगीन नारी को अपना घर, कार्यक्षेत्रा का भार एवं संतान को शिक्षित करने की जिम्मेदारी, समाज, देश व राष्ट्र के प्रति कर्त्तव्य एवं उसके वर्तमानयुगीन अधिकारों से भी परिचित कराती हैं।

वैदिक युग में –

''गृहिणी गृहमुच्यते''

जायेदस्तं मघ्वन्नेदु –

सखा वा जाया इत्यादि उक्तियाँ स्थल–स्थल पर नारी की महत्ता एवं उसके सर्वाङ्गीण रूप को प्रदर्शित करती है।

बालक के मन मस्तिष्क एवं व्यक्तित्व निर्माण में माता का इतना अधिक योगदान है कि विधाता की इस अनुपम कृति के विषय में विवेकानंद ने भी कहा है कि ''भारत की स्त्री जीवन के आदर्श का आरम्भ व अन्त उसके ''मातृत्व'' में होता है। हमारे यहाँ ईश्वर को ''माँ'' कहा जाता है, स्वार्थशून्यता, महानता, सहिष्णुता एवं क्षमाशीलता अन्यत्र दुर्लभ है तभी कहा गया –

''कुपुत्रो जायेत् क्वचिदपि माताकुमातान भवति

अटूट सत्य यही है कि नारी विविध रूपों में प्रिया पत्नी एवं माँ के आयाम को प्राप्त कर अपने कर्त्तव्यों, उत्तरदायित्वों एवं रिश्ते–नातों को संजोकर चलती हुई ''चरेवैति चरैवेति' की आदर्श मूल धारणा के यथार्थ को स्वीकार करती हुई वैदिक युग से लेकर आज तक मध्ययुग की विषम परिस्थितियों को भी हंसकर सहती हुई अपनी गरिमा को बनाए रखते हुए पुनः अपना पदप्रतिष्ठापन के प्रति किस प्रकार अग्रसर है यही हमारे लेख का मुख्य उद्देश्य हैं। इसमें नारीशिक्षा का जो वैदिक युग में निःस्वार्थ भावना से दी गई उसका महत्त्वपूर्ण योगदान है।

सर्वप्रथम दृष्टिपात करें तो शिक्षा मनुष्य हेतु चाहे वह नारी हो या नर सभी के लिए अनिवार्य है उपनिषदों में ''विद्ययाऽविन्दतेऽमृतम्'' द्वारा इसी तथ्य की उद्घोषणा की गई है।

शिक्षा व्यक्ति, समाज एवं राष्ट्र के विकास की परिचायिका होने के साथ उनकी प्रगतिपथ की धुरी स्वरूपा होती है।

समाज व देश की सांस्कृतिक, बौद्धिक एवं वैज्ञानिक प्रगति का ज्ञान उस देश व समाज की शैक्षिक स्थिति के आधार पर होता है। प्रत्येक व्यक्ति का विकास समाज के सर्वाङ्गीण विकास हेतु अनिवार्य है। वह उच्चशिक्षा प्राप्ति द्वारा ही संभव हो सकता है। शिक्षा द्वारा वह उचित दृष्टिकोण विकसित होता है जिसमें बुद्धि, बल एवं कार्यक्षमता की उत्तरोत्तर वृद्धि होती है।

रायदान के मत में – ''स्त्रियों ने सर्वप्रथम सभ्यता की नींव डाली और मानव को इधर–उधर भटकने से बचाया।''

समाज की प्रगति व उत्थान में स्त्रियों की महत्त्वपूर्ण भूमिका रही है। नारी विधाता की वह अनुपम कृति है जो सभी क्षेत्राों में सर्वाङ्गीण विकास को प्राप्त कर सभी तत्वों एवं तथ्यों को अभूतपूर्व ढंग से अपने में संजोए हुए हैं। सौभाग्य की बात है कि भारतवर्ष में स्त्रीशिक्षा विश्व के अन्य देशों की अपेक्षा अत्यन्त प्राचीन एवं महत्त्वपूर्ण है क्योंकि पारिवारिक, सामाजिक एवं आर्थिक जिम्मेदारियों का पालन करती हुई हमारे देश की स्त्रियाँ शिक्षा के क्षेत्र में भी आगे बढ़ती गईं।

ऐतरेय ब्राह्मण में नारी को पुरुष की आत्मरूपा बताया है –

''पुरुषो जाया कित्वा कृत्सनतरमिव आत्माकं मन्यते।''

ऐतरेय ब्रा. 1/25

शत बा. 3/3/1/10

गृहा वै पत्न्यै प्रतिष्ठा

ऋग्वैदिक काल में माता–पिता का असीम दुलार 'कन्या' को प्राप्त होता है।

''संगच्छमाने युवती समनो स्वसाराजामी पित्रोरुपस्थे।''[1]

उस युग में नारीदर्शन सौभाग्य का प्रतीक माना जाता था छान्दोग्योपनिषद् के अनुसार पुरुष यदि स्वप्न में स्त्री को देखे तो वह समझ जाए कि उसका कार्य पूर्णता की ओर है। इस प्रकार की धारणा नारियों के प्रति उचित एवं समादरणीय दृष्टिकोण को स्पष्ट करती है –

''स यदि स्त्रियां पश्येत्समृद्धं कर्मेति विश्वाद्''[2]

प्राचीन भारत में धारणा थी कि शिक्षा सम्बन्धी संस्कार द्वारा ही व्यक्ति समाज में यथोचित सम्मान प्राप्त करता है –

''जन्मना जायते शूद्रः संस्कारादद्विज उच्यते
विद्यया याति विप्रत्वं त्रिभिः क्षोत्रिय उच्यते।''[3]

प्राचीन समय में माता पिता का परम पुनीत कर्त्तव्य था :–

''बच्चों को उचित शिक्षा देना'' तथा उनके जीवन को सुधारने में सहयोग देना

''तस्मात्पुत्रमनुशिष्टं
लोक्यमादुस्तस्मादेवानुशास्तिं''[4]

वैदिक युग में शिक्षाधिकार एवं यज्ञाधिकार सभी स्त्रियों को प्राप्त थे। पत्नी के बिना यज्ञ के फल की प्राप्ति नहीं थी।

''अयज्ञियो वा एष योऽपत्नीकः।''[5]

प्रसिद्ध विद्वान अल्तेकर के अनुसार ऐसे चार प्रकार के यज्ञ थे जिसे स्त्रियाँ ही करती थी।[6]

उस समय जाया ही ''घर'' है ऐसा माना जाता था

''जायेदस्तं मघवन्त्येदु योनिस्तदित्वा युक्ता हरयो वहन्तु''[7]

परिवार हेतु पत्नी कल्याणकारिणी एवं मंगलस्वरूपा होती है इसलिए उसे पति के लिए क्षेमकारिणी बनने का उपदेश देते हुए अदुर्मगली, अघोरचक्षु अपतिघ्नी एवं शिवा कहा गया है।

पतिपत्नी का सम्बन्ध उस युग में अत्यन्त अटूट था।[8]

''आ नः प्रजा जनयतु प्रजापतिराजरसाय समनवरवर्यमा
अदुर्मगलीः पतिलोकमा विशशंनो भव द्विपदं शं चतुष्पदे''

वैदिक कोष में श्री राजवीरशास्त्री जी ने ''महिषी'' शब्द के विषय में मंतव्य देते हुए उसे उत्तमकुल में उत्पन्न हुई विद्या शुभगुणरूप सुशीलतादि गुणों से युक्त विदुषी स्त्री माना है।

''दोषहन्त्री विद्याजनयित्री''[9]

ब्राह्मणकाल में 'कुमारी' द्वारा अग्निहोत्रादि में त्रुटि निकालने का वर्णन भी प्राप्त होता है जिससे स्पष्ट है कि उस समय कुमारियों को विधिवत् शिक्षा प्रदान की जाती थी –

''एतद् हैवोवाच कुमारी गंधर्वगृहीता वक्तास्मो च इदं पितृभ्यो

यद्वैतदग्निहोत्रम् उभयेद्युरहूयतान्येद्युवति तदेतर्हि दूयत इति।''[10]

वैदिक युग में नारीशिक्षा का आरंभ भी उपयन संस्कार से होता था। वे भी गुरु के आश्रम में रहकर ब्रह्मचर्य व्रत का पालन करती थी।

1. ब्रह्मचर्येण कन्या युवानं विदतेपतिम्[11]

गृहसूत्रों में गोमिल–गृहसूत्र में नारीशिक्षा की आवश्यकता पर बल देते हुए कहा गया है कि यदि पत्नी अशिक्षित है तो वह यज्ञ करने में समर्थ नहीं होती।

''न हि स्वल्नधीत शय्कीति पत्नी हेतुमिति।''

इसी प्रकार बृहदारण्यक उपनिषद् में वर्णित है कि विदुषी पुत्री की उत्पत्ति हेतु इस प्रकार परामर्श दिया जाता था।[12]

नारी शिक्षा के विविध आयाम

वैदिक युग में विद्या अध्ययन अध्यापन हेतु दो विभाग या प्रकार माने जाते थे –

1. अपराविद्या (अर्थात् लौकिक विद्या)
2. पराविद्या (अलौकिक विद्या)

वैदिक युग में दोनों ही प्रकार की विद्या प्राप्ति में नारियाँ पुरुषों के समकक्ष ही पारंगत एवं विद्वत–समाज में समादरणीय थी। ऐसा तभी संभव हो सकता है जब उनकी प्रारम्भिक शिक्षा दीक्षा का स्तर अत्यन्त उच्च हो तथा उन्हें शिक्षादीक्षा के समानावसर प्रदान किए गए हों क्योंकि ब्रह्मचर्या एवं दार्शनिक विषयों की अवधारणा एवं तथ्य स्थापन में उस युग में नारियों का अपूर्व योगदान रहा है। ऐसे भी उदाहरण उपलब्ध है जहाँ ब्रह्मविद्या प्रसंग में विदुषियों द्वारा पुरुषों का पथप्रदर्शन किया गया। यथा केनोपनिषद् का यक्षोपाख्यान इस बात का प्रत्यक्ष प्रमाण है कि ब्रह्म के जिज्ञासु अग्नि, वायु और इंद्र आदि देवता जब यत्नशील होने पर भी ब्रह्मप्राप्ति में असफल रहे तब उस हैमवती द्वारा उन्हें ब्रह्मज्ञान कराया गया।

पराविद्या एवं अपराविद्या को समझाने में दिए गए तथ्यों को उत्कृष्टता से वर्णित किया गया।[13]

धार्मिक सम्मेलनों एवं शास्त्रार्थों में नारियों की प्रतिस्पर्धा पुरुषों से होती थी। यह तो सर्वविदित ही है कि शास्त्रार्थ में चर्चा तभी ही की जा सकती है जब उस विषय की पूर्णतया पकड़ हो, सभी तथ्यों एवं तत्वों का यथावत् ज्ञान हो, बारम्बार उद्धरणों के माध्यम से भी स्पष्टीकरण किया जा सकता है। अपनी विद्वत्ता का प्रमाण वैदिकयुग में नारियों ने दिया है। सर्वविदित ही है कि विदेहराज जनक की ब्रह्मजिज्ञासा से प्रेरित यज्ञ में ब्रह्मवेत्ता एवं ब्रह्मवादिनियों को निमंत्रित किया गया। ब्रह्मवादिनी के रूप में ''गार्गी'' वाचंकची का उल्लेख भी प्राप्त होता है। जब पुरुष शास्त्रार्थी याज्ञवल्क्य से प्रश्न कर शांत हो गए तब ''गार्गी'' ने दो बार प्रश्न करने का साहस किया। तब याज्ञवल्क्य ने उसे एक तरह से चुप कराते हुए कहा –

''अनतिप्रश्न्यां वै देवता–मतिपृच्छसि गार्गी मातिप्राक्षी।''

वैदिक युग में जो कन्याएँ या छात्राएँ पर्याप्त से अधिक ऋचाओं को पढ़ लेती थी उन्हें ''बहवृची'' कहा जाता था।

पाणिनिमुनि के मतानुसार भी ''कठ'' शाखा का अध्ययन करने वाली छात्रा ''कठी'' कही जाती थी। पतंजलि के मतानुसार आपिशालि के व्याकरण का अध्ययन करने वाली छात्रा ''आपिशला'' कहलाती थी।

वैदिकयज्ञों की दुरुहता के कारणवश उनके विषय में विशिष्टाध्ययन हेतु एक नवीन शाखा की उत्पत्ति व विकास हुई जिसे ''मीमांसा'' कहा गया। कई कन्याएँ वैदिक युग में इसका अध्ययन करती थी। काशकृत्स्नी की एक पुस्तक छात्राओं के लिए ही लिखी गई। इसका विशिष्ट अध्ययन कर दक्षता प्राप्त करने वाली कन्या ''काशकृत्स्ना'' कहलाती थी।

अन्य शिक्षाएँ

वैदिक युग में कन्याओं को गणित, वैद्यक, संगीत, नृत्य एवं शिल्प की शिक्षा भी दी जाती थी।

उस युग में संगीत शिक्षा का भी यथोचित महत्त्व था। संगीत व नृत्य की शिक्षा वैदिकयुग में यदि कन्याओं को प्रदान की जाती थी तो इसका अभिप्राय यह है कि उन्हें घर से बाहर जाकर भी शिक्षा प्राप्ति के अवसर प्राप्त होते थे। संस्कारों के अवसर पर नारी संगीत की चर्चा ऋग्वेद में उपलब्ध होती है। स्त्रियों द्वारा बजाएँ जाने वाले अपघाटिलिका, तालुकवीणा, काण्डवीणा, पिछोरा आदि वाद्ययंत्रों के नाम उपलब्ध होते हैं। ऋग्वेद में नारियों के संगीत व नृत्यकौशल का विवेचन है।[14]

मंत्रदृष्टा नारियाँ

वैदिक युग में नारियों की शिक्षा सम्बन्धी अनेक तथ्यों का अवलोकन किया गया। शिक्षाक्षेत्र में नारियों हेतु यह स्वर्णयुग था। इस युग में मंत्रदृष्टा नारियों का भी उल्लेख प्राप्त होता है। ऋषियों के विषय में कहा गया –

''ऋषयस्तु मंत्रद्रष्टारः न तु कर्तारः'

इसी श्रृंखला में नारियों द्वारा भी मंत्रों का साक्षात्कार किया गया। वैदिक समाज में उन्हें सर्वाधिक सम्माति पद ''ऋषिकाओं'' के रूप में दिया गया। वैदिक मंत्रों की पवित्रता एवं प्रकृतिरहस्यों को उद्घाटित करने वाली अनुभूतियों को व्यक्त करने की अपूर्व क्षमता सर्वविदित है। वैदिक ऋषि जैसे अंगिरा, अगस्त्य, वसिष्ठ इत्यादि है उसी प्रकार ''ब्रह्मवादिनी'' ऋषिकाओं की संज्ञा को प्राप्त करने वाली मंत्रदृष्टा ऋषिकाओं का भी वर्णन मिलता है जिस पर हम सबको अत्यन्त गर्व है।

स्त्रिया पूर्वत एव तं समभवततौ मनुष्या अजायन्त – बृहदा.उप. 14/4/2–4–5.

ऋग्वेद में बीस से अधिक ऋषिकाओं के नाम आते हैं जो इस प्रकार है – अपाला, इंद्राणी, उर्वशी, कद्रु, गोपा, घोषा, जनिता, जुहू, दक्षिणा, देवयानी, पौलोमी, मेधा,

यमी, रात्री, रोमशा, लोपामुद्रा, वागाम्भृणी, विश्वावारा, शांर्गा, श्रद्धा – कामायनी, श्री, सरमा और सावित्री। इसके अतिरिक्त सामवेद की चार और ऋषिकाएँ हें

अकृष्टभाषा, गंपायना नोधा और सिकता निवावरी।

ऋग्वेदीय आश्वासन ब्रह्मयज्ञावसर पर ''बडवा प्रातिथेयी सुलभा मैत्रेयी और गार्गी वाचंकची की वंदना की जाती थी।

मैत्रेयी भी ब्रह्मवादिनी थी और मुक्तिज्ञान में रूचि रखती थी

''तथाहं मैत्रेयी ब्रह्मवादिनी स्त्रीप्रज्ञैव तहि कात्यायनी'' (बृहदा.उप. 14/4/5/1)

युद्धकला की शिक्षा

वैदिक युग में क्षत्रिय कन्याएँ धनुर्वेद अथवा धनुर्विद्या की शिक्षा ग्रहण करती थी एवं प्रायः युद्ध में भी भाग लेती थी।[15] ऋग्वेद के घोषा रचित सूक्त में बधिमती और विष्पला नामक दो स्त्रीयोद्धाओं का वर्णन उपलब्ध होता है। उन्होंने युद्धभूमि में अन्य योद्धाओं की भाँति युद्ध किया। बधिमती के हाथ कटने के उपरान्त अश्विनी कुमार द्वारा उसे सोने के दो हाथ देने का वर्णन है।[16] ऋग्वेद में शशीयसी नामक एक और स्त्रीयोद्धा का विवेचन प्राप्त है।[17]

ऋग्वेद में एक स्थल पर पत्नियों ने आपत्काल में –

राष्ट्र व राष्ट्रधारा वह अनंत प्रवाह है जिसमें बहकर प्रत्येक व्यक्ति आनंदानुभूति करता है। नारियाँ वैदिकयुग से ही देश पर मर मिटने का हर संकल्प लेकर चलती है। ऋग्वेद में राजनैतिक अवस्थाओं में राजनैतिक कुशलता का परिचय नारियों में दिया है।

युद्धकला के साथ नारियाँ शिक्षिता होने के कारण यज्ञ में तथा सम्पत्ति में भी समानाधिकार प्राप्त करती थीं। नागर पत्नियों द्वारा अनेक यज्ञ किए जाते थे। बिना पत्नी यज्ञ व्यर्थ था।

यज्ञो न योऽपत्नीकः।

वैदिक काल के उपरान्त स्त्रीशिक्षा के क्षेत्र में पर्याप्त ह्रास दिखाई दिया। बीच–बीच में कई कवियित्री एवं विदुषियों का उल्लेख प्राप्त होता है।

विवाह की आयु शनैः शनैः कम होती गई जिसका प्रत्यक्ष प्रभाव शिक्षा पर हुआ। शिक्षा क्षेत्र के परिवर्तन एवं शिक्षा संबंधी मान्यताओं के कारण कन्या को शिक्षित करना निषिद्ध भी कर दिया गया।

''त्रिशद्वर्षोद्वहते कन्यां हत्द्यां द्वादशवार्षिकाः
त्र्यष्टवर्षोऽष्टवर्षा वा धर्मे सीदति सत्वरः''[18]

वैदिकी प्रक्रिया की जटिलता एवं प्रांजलता के कारण भी माता–पिता कन्या की शिक्षा–दीक्षा पर कम ध्यान देने लगे जिससे नारी साक्षरता में कमी आ गई जिसके कारणवश धार्मिक कृत्यों में, संपत्ति के अधिकारों में एवं सामान्य सामाजिक दृष्टि से नारी के अधिकारों का क्रमशः हनन होने लगा। स्वयं शिक्षिता न होने के कारण विद्रोह की आवाज़ भी नारी न उठा पाई।

आगे चलकर उन्नीसवीं शताब्दी में राजा राममोहन राय एवं स्वामी दयानंद जैसे सुधारवादी नेताओं के सुप्रत्यनों से अनेक अंधविश्वास एवं रूढ़ियों का अन्त हुआ जिससे नारी की स्थिति में परिवर्तन की लहर आनी शुरू हुई। नारी शिक्षा को शास्त्रसम्मत बताते हुए लोगों को उन्हें मानने को कहा गया।

''यथेमां वाचं कल्याणमावदानि जनेभ्यः
ब्रह्म राजन्याभ्यां शूद्राय चार्याय च स्वाय चारणाय''

(यजुर्वेद 26.2)

इसकी व्याख्या में स्वामी दयानंद ने लिखा था ''ईश्वर स्वयं कहता है कि हमने ब्राह्मण क्षत्रिय वैश्य और शूद्र अपने स्त्रियादि और अतिशद्रादि के लिए वेदों का प्रकाश किया है।

उनसे प्रेरणा प्राप्त कर 1781 में कलकत्ता तथा मद्रास एवं 1792 में बनारस में संस्कृत कॉलेज खोले गए। नारी शिक्षा को शास्त्रसम्मत घोषित कर इन समाजसुधारकों ने कन्याशिक्षा के लिए द्वार खोले गए। ईश्वरचन्द्र विद्यासागरजी भी नारीशिक्षा के समर्थक थे जिन्होंने नारी कालेज एवं कन्या विद्यालय खुलवाए। अंग्रेजी शिक्षा को भी समर्थन इन्होंने दिया। प्राइमरी हाईस्कूल एवं कॉलेजों की पढ़ाई लड़कियों के लिए अति उपयोगी मानी गई। 1882 में प्रथम बार कन्याएँ ग्रेजेएट हुई।

बीसवीं शती में पटना, लखनऊ, अलीगढ़, बनारस, आगरा, दिल्ली, नागपुर, ढाका, हैदराबाद, मैसूर आदि अनेक स्थलों पर विश्वविद्यालय स्थापित हुए। सभी में कन्याओं के अध्ययन की व्यवस्था थी। सरकार के अतिरिक्त ब्रह्मसमाज, आर्यसमाज, सर्वेंटस ऑपफ इंडिया सोसायटी तथा लोकसेवक संगठनों के प्रयत्नों से लड़कियों की शिक्षार्थ स्कूल व कॉलेज खोले गए।

1991 में पूना में महिलाओं के लिए इंडियन वूमेन विश्वविद्यालय की स्थापना की गई।

हमारा इतिहास साक्षी है कि नारी की गरिमा एवं महत्ता प्रत्येक काल में विद्यमान रही है चाहे उसके गरिमामय व्यक्तित्व को कम करने का प्रयास ही किए गए परन्तु नारी की अटूट शक्ति, सबल संकल्पभावना एवं शिक्षाप्राप्ति एवं आगे बढ़ने की दृढ़ इच्छा की विजय हुई क्योंकि ''दृढ़ संकल्प से दुविधा की बेड़ियाँ कट जाती है और जो नारी सर्वजनसमुदाय की प्रेरणास्त्रोत रही है वह समझ में, शिक्षाक्षेत्र में कल्याण क्षेत्र में कभी भी कहीं भी किसी से पीछे नहीं छूट सकती।''

प्राचीनयुगीन नारी की स्थिति से प्रभावित होकर उन्हें पुनः सर्वप्रथम पद पर प्रतिष्ठापित करने हेतु विविध नीतियाँ, आयोग एवं कमीशन बिठाए गए। उनका विवेचन इस प्रकार है –

''साम्राज्ञी श्वसुरे भव की भावना सर्वत्र प्रतिफलित होती दिखाई देती है।''

भारत सरकार द्वारा नारीशिक्षा के सुधार एवं समस्याओं से निवाराणार्थ अनेक कमीशन बनाएँ गएँ एवं नीतियाँ भी स्पष्ट की गई –

1. डॉ. राधाकृष्णन आयोग
2. आचार्य नरेन्द्र देव समिति
3. माध्यमिक शिक्षा आयोग
4. राष्ट्रीय महिला शिक्षा समिति
5. राष्ट्रीय महिला शिक्षा परिषद्

6. हंसा मेहता समिति
7. राष्ट्रीय शिक्षा आयोग कोठारी कमीशन
8. राष्ट्रीय शिक्षा नीति
9. आचार्य राममूर्ति समिति

लिङ्गभेद समाप्त करने हेतु महिलाओं को समानावसर प्रदान करने हेतु संविधान के अनुच्छेद 14 में स्त्रियों को समानाधिकार दिलाने की बात की गई है।

इसके अतिरिक्त भारत सरकार पिछले दो दशकों से 39 केन्द्रीय कानूनों के द्वारा समानता के सभी अवसर प्रदान कराने का प्रयास किया जा रहा है।

श्री के नटराजन् के अनुसार

यदि सौ वर्ष पूर्व मरने वाला व्यक्ति आज फिर जीवित हो जाए तो आश्चर्यचकित करने वाला सर्वप्रथम एवं सबसे महत्त्वपूर्ण परिवर्तन स्त्रियों की स्थिति में क्रांतिकारी परिवर्तन होगा।

महात्मा गाँधी ने कहा था –

इन सभी योजनाओं के मूल में ''गृहिणी गृहमुच्यते'' की भावना दृष्टिगत होती है।

महिला शिक्षा एवं विकास हेतु भी अनेक योजनाएँ एवं नीतियाँ भी सरकार द्वारा चलाई गई है। उन सबका मूलस्त्रोत या प्रेरणास्त्रोत प्राचीन समय में वैदिक युग में नारी की शिक्षा एवं कल्याण सम्बन्धी योजनाएँ ही हैं।

1. बेटी बचाओ बेटी पढ़ाओ कार्यक्रम – बालिकाओं के अस्तित्व, संरक्षण एवं शिक्षा को बढ़ावा देने के उद्देश्य से 2015 में आरंभ की गई।
2. किशीरी सशक्तिकरण की राजीव गाँधी सबला योजना – 2011 में इस योजना का आरंभ किया है।
3. इन्दिरा गाँधी मातृत्व सहयोग योजना
   1. अल्पायु की माताओं को वित्तीय सहायता
   2. नवजात शिशु वाली माता को उत्तमाहारादि हेतु वित्तीय सहायता
4. कस्तूरबा गाँधी विद्यालय योजना
5. प्रधानमंत्री उज्जवला योजना : यह योजना 2016 में आरंभ की गई। मुख्य उद्देय महिलाओं की स्वास्थ्य रक्षा तथा सशक्तिकरण की भावना है।
6. स्वाधार घर योजना : महिला एवं बाल मंत्रालय द्वारा चालित योजना, महिलाओं को व्यवसायिक प्रशिक्षण देना।
7. महिलाओं हेतु प्रशिक्षण एवं रोजगार कार्यक्रम : महिलाओं का कौशल विकसित कर रोजगार देना है।

वैदिक काल की विदुषी नारियों की प्रतिभा ही अधुना वर्तमान समय में नारियों को अपनी प्रतिभा प्रदर्शित करने को प्रेरित करती रही।

लौकिक संस्कृत साहित्य में भी विज्जका, माहला, मोरिका, शीला भट्टारिका, अवन्तिसुन्दरी, गंगादेवी, रामभद्राम्बा तिरुमालाम्बा, शिवासदेव, बीमाबाई, वैजयन्ती आदि प्राचीन एवं मध्यकार की प्रसिद्ध विदुषियों एवं कवयित्रियों का उल्लेख प्राप्त होता है।

18वीं शती में सुन्दरी व कमला का विवेचन तथा 19वीं शताब्दी में अनन्ताचार्य की पुत्री त्रिवेणी का उल्लेख मिलता है जिसमें रागाभ्युदयम्, सम्पतकुमारविजय, लक्ष्मीसहस्रं, रंगनाथसहस्रं, शुकसंदेश, भंगसंदेश, गंगराजसमुदय, तत्त्वमुदोदयं लिखकर कीर्ति अर्जित करी।

इसी श्रृंखला में पंचगंगेश की पुत्री कामाक्षी की रचना रामचरित उल्लेखनीय है।

आधुनिक संस्कृत विदुषियों में सर्वप्रथम नाम पंडिता क्षमाराव जी का है। उनकी पुत्री ''लीलारावदयाल पण्डिता'' ने पंडिता क्षमारावजी की कथाओं को नाट्यरूपान्तरण के पश्चात् अमेरिका, नेपाल आदि में प्रस्तुत किया। साथ ही 24 रूपकों की रचना की।

यथा गिरिजायाः प्रतिज्ञा, असूचिनी जयन्तु कुमाऊनीयाः, क्षमाचरितम्, कृपाणिका।

एवमेव डा. रमा चौधरी का नाम विशेष स्मरणीय है जिन्होंने 25 रूपकों की रचना की।

कमला पाण्डेय जी, डॉ. नलिनी शुक्ला जी, डॉ. पुष्पा दीक्षित जी, डॉ. मनोरमा तिवारी जी, डॉ. महाश्वेता चतुर्वेदी, डॉ. मिथिलेश कुमारी मिश्रा, डॉ. वनमाला भण्डारकर, डॉ. सावित्री देवी, डॉ. सिम्मी कन्धारी।

परम आदरणीय डॉ. शशि तिवारी जी वाणी वन्दना, पश्य मम भारतम् आदि की रचना की। वैदिक साहित्य को अन्तर्राष्ट्रीय स्तर तक ले जाकर संस्कृत एवं संस्कृति की ध्वजा फहराते हुए ..... 37 ग्रन्थों का प्रणयन किया ..... 150 राष्ट्रीय व अन्तर्राष्ट्रीय गोष्ठियाँ संयोजित की । ये सब हमारे लिए दीपस्तम्भ हैं नींव के पत्थर हैं जिन्होंने आधारभूमि देकर हम सबका मार्ग प्रशस्त किया है। जीजाबाई, लक्ष्मीबाई शासिका के रूप में उल्लेखनीय है।

इसके अतिरिक्त सभी क्षेत्रों में आधुनिक युग में नारियाँ अग्रगण्य है, स्वर्गीय सुषमा स्वराज, श्रीमती निर्मला सीतारमन, स्मृति ईरानी, सत्यवती सत्याग्रही थी। Lady Cricket Team Captain] Meri Com Sindhu, Anurunahati Bhattacharyaji, Chanda Kochar, Lata Mangeshkar, Ritu Kumari, Bhumika Chawla, Kiran Majumdalshah, Kalpana Chawla, Vandana Luthra, Vibha Padakar, Indu Jain, Mangala Naritika, Aditi Pant, Indira Hinduja, Debjani Gosh, Paramjeet Khurana, Sunita Gupta आदि के नाम प्रत्येक क्षेत्र में उल्लेखनीय एवं विश्वप्रसिद्ध है।

''वसुधायां त्वं शक्तिस्वरूपा
त्वम् हि रणचण्डी भाग्यविधाता
त्वम् हि संस्कारमणां जननी माता
त्वं हि लक्ष्मी सावित्री जाता
त्वं हि सत्कर्मनिर्वहणी जाया
त्वं हि भगिनी कन्या अर्पिता दुख त्राता।''

तभी तो कहा गया –

धरती पर हो शक्ति स्वरूपा
तुम रणचण्डी भाग्यविधाता
संस्कारों की शाला तुम हो
तुम लक्ष्मी सावित्री सीता
सत्कर्म की निर्वाहिनी तुम
हो सहधर्मिणी हो अर्पिता
सहकर अपह्य प्रसव वेदना
तुम लाल धरा पर लाती हो
तुम हो धात्री अखिल जगत् की
तुम्हीं सृष्टि सृजन बढ़ाती हो
हे रूपवती हे कमनीया

ईश्वर की तुम अद्भुद् रचना
तलवार घरो जब कर में जी
मुश्किल है अविरल का बचना

सौभाग्य से नारी की स्थिति वर्तमानयुग में इतनी सुदृढ़ हो चुकी है कि वह प्रकाश पाने हेतु तड़पती नहीं है बल्कि स्वयं प्रकाशपुंज बनकर अन्य लोगों को अज्ञानान्धकार से हटाकर स्वयमेव प्रार्थना करती है अन्य उससे ही प्रार्थना करते है।

''असतो मा सद्गमय
तमसो मा ज्योतिर्गमय''

इसका प्रत्यक्ष प्रमाण आज की सभा में उपस्थिति अन्य पदों पर आसीव प्रबुद्ध विदुषियाँ हैं या हमारी भावी पीढ़ी की भविष्यनिर्माता कन्याएँ हैं जिनमें मैं अवश्यमेव कहूँगी।

यूयम् दीपं प्रज्ज्वलय
तिमितरं स्वयमेव गमिष्यता रे।

अध्ययन का उद्देश्य

वैदिक युग में उपलब्ध नारी शिक्षा एवं कल्याण सम्बन्धी तथ्यों को मूल उद्धरणों के माध्यम से वर्णित करते हुए उनकी वर्तमान समय में प्रासंगिकता बताना तथा साथ ही साथ वर्तमान समय में उपलब्ध एवं उद्घोषित कल्याणकारी योजनाओं एवं नीतियों के साथ विवेचनात्मक, विश्लेषणात्मक एवं तुलनात्मक अध्ययन प्रस्तुत करना ही इस लेख का मुख्य उद्देश्य है। इस प्रकार के तुलनात्मक अध्ययन के पश्चात विभिन्न कल्याणकारिणी तथ्यों की उपयोगिता को भी स्पष्ट करने का भी प्रयास किया जायेगा तथा प्राचीन वैदिक अवधारणाएं वर्तमान नीतियो के क्रियान्वयन में किस प्रकार सहायक सिद्ध होंगी यह भी स्थापित किया जायेगा।

Describing the facts related to women's education and welfare available in Vedic era through original quotations, mentioning their relevance in the present time and also presenting a critical, analytical and comparative study with the welfare schemes and policies available and announced at the present time will be the aim of the study. The main objective of this article is that after a comparative study of this kind, an effort will also be made to clarify the usefulness of various welfare factors and how the ancient Vedic concepts will prove to be helpful in the implementation of the current policies

निष्कर्ष

नारी चेतना की मशाल तो उठाओ अनेक मशाल जल जाएँगी। और यदि नारी चेतनायुक्त हैं, शिक्षिता है, सर्वगुणसम्पन्ना है तो हमारे प्रधानमंत्री जी का स्वप्न, ''बेटी बचाओ बेटी पढ़ाओ'' की सिद्धि अवश्यमेव पूर्ण रूप में होगी। इन नारियों एकमनसा एकवाचा एककर्मणा होकर सभी के सहयोग से अपनी राष्ट्रधरा की सरिता बनकर उसे परिवृद्ध, परिपुष्ट एवं ज्ञान संवलित करने का प्रण करें तो हमारा देश विश्वगुरु के पद पर शीघ्र ही प्रतिष्ठित हो जाएगा। शक्तिरूपा नारी के उद्घोष से कथन की समाप्ति करूँगी –

अहमेव स्वयमिदं, ब्रवीमित
जुष्टं देवेभिरुत मानुषेभिः
चमकामये तमुग्रं कृणोमि तं
ब्रह्माणं तं ऋषिं तं सुमेधम्।।

अंत टिप्पणी

1. *ऋग्वेद 11.185, 5.*
2. *छान्दो.उप. 5/2/7.*
3. *डॉ. राजबली पाण्डेय – हिन्दू संस्कार, पृ. 34.*
4. *बृहदा.उपनि. 1/5/7.*
5. *क. शत.ब्राह्मण. 5.1*
   ख. या दम्पती सुमनसा सुनूत आचधावत। – ऋ. 8. 31.
6. *A.S. Altekar, The Position of Women in Hindu Civilization, 1959, पृ. 198.*
7. *ऋग्वेदः 3/53/4.*
8. *ऋ. 10/85/43.*
9. *वैदिक कोष, राजवीरशास्त्री, पृ. 855.*
10. *ऐतरेय ब्रा. 5.25.4.*
11. *अथर्ववेद 11.9.16.*
12. *अथ य इच्छेत् दुहिता मे पंडिता जायेत। सर्वमायुरिवादिति तिलोदनं पाचयित्वा सपिष्भन्तमश्नीयातामीश्वरौ जनयितवै। (बृह.उ. 14/6/4/51).*
13. *द्विविधे वेदितव्ये – परा चैवापरा च। तत्रापरा ऋग्वेदा यजुर्वेदः सामवेदोऽथर्ववेदः शिक्षाकल्पो व्याकरणं निरुक्तं छंदो ज्योतिषामिति। अथ परा यथा तदारमधिगम्यते।'' (मुण्डकोपनिषद्)*
14. *ऋग्वेद 1/9/2/4.*
15. *ऋग्वेद 10/39/40.*
16. *ऋग्वेद 1/108/8 एवं 1/112/10.*
17. *ऋग्वेद 1/32/9.*
18. *मनु. 9.1.94.*

संदर्भ ग्रंथ सूची

1. *ऋग्वेद – स्वाध्यायमंडल, पारडी*
2. *यजुर्वेद – स्वाध्यायमंडल, पारडी*
3. *अथर्ववेद – (सम्पादक) सातवलेकर, स्वाध्यायमंडल, पारडी 1983.*
4. *ऐतरेय ब्राह्मण – सम्पादक एवं अनुवाद, मार्टिन हॉग, भारतीय पब्लिशिंग हाऊस, दिल्ली।*
5. *बृहदारण्यकोपनिषद् – गीताप्रेस, गोरखपुर।*
6. *ब्राह्मणग्रन्थों में नारी – डॉ. मंजुला गुप्ता, जे.पी. पब्लिशिंग हाऊस, दिल्ली।*
7. *नारीविमर्श की भारतीय परम्परा – कृष्णदत्त पालीवाल, सस्ता साहित्य मण्डल प्रकाशन, नई दिल्ली।*
8. *भारतीय नारी – विविध आयाम, डॉ. चन्द्रमोहन अग्रवाल।*
9. *Great Women in Sanskrit Classic, Shiv Prasad Bhattacharya.*
10. *Position of Women in Hindu Civilization, Altekar.*
11. *Women in Rigveda, Bhagwat Sharan Agarwal.*
12. *प्राचीन भारतीय शिक्षण पद्धति – डॉ. अनन्त सदाशिव, अल्तेकर, मनोहर प्रकाशन, वाराणसी।*